दिल्ली उच्च न्यायालय : नई दिल्ली

आदेश तिथि: 24 नवंबर, 2023

सि.पु.या. 346/2023

अमरजीत सिंह ..... याचिकाकर्ता

द्वारा: श्री गगंप्रीत सिंह और सुश्री नवरुति ओझा, अधिवक्ता

बनाम

गुरप्रीत सिंह और अन्य .....प्रत्यर्थीगण

द्वारा: कोई नहीं

कोरमः
माननीय न्यायमूर्ति श्री चंद्र धारी सिंह

आदेश

चंद्र धारी सिंह, न्या. (मौखिक)

सि.वि.आ. 60985/2023 (छूट)

छूट केवल अपवादों के अधीन दी गई है।

आवेदन का निपटान किया जाता है।

सि.पु.या. 346/2023 और सि.वि.आ. 60984/2023 (स्थगित)

1. याचिकाकर्ता की ओर से सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 (इसके बाद "सि.प्र.सं.") की धारा 115 के तहत वर्तमान सिविल पुनरीक्षण याचिका दायर की गई है, जिसमें निम्नलिखित राहतों की मांग की गई है:-

> *"क. श्री हिमांशु रमन सिंह, ए.डी.डी.एल./सीनियर सिविल न्यायाधीश के.के.डी. न्यायालय द्वारा सिविल वाद सं. 547/2022 में दिनांक 23.09.2023 को पारित आदेश को पुनरीक्षण और अपास्त करने की अनुमति दें, जिसके तहत विद्वान न्यायालय ने याचिकाकर्ता द्वारा सिविल प्रक्रिया संहिता के आदेश 7 नियम 11 के तहत दायर आवेदन को खारिज कर दिया और प्रत्यर्थीगण द्वारा दायर अनिवार्य और स्थायी व्यादेश के लिए वाद को खारिज कर दिया..."*

2. वर्तमान याचिका दायर करने से जुड़े संक्षिप्त तथ्यों को यहाँ पुनः प्रस्तुत किया गया है:

i. 6 अक्टूबर, 1959 को श्री एस. हरचरण सिंह और एस. स्वर्ण सिंह यानी प्रत्यर्थीगण के दादा और उनके सगे भाई ने सं. 1/2334, राम नगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली 110032 (इसके बाद "वाद संपत्ति") वाली संपत्ति खरीदी।

ii. वर्ष 1959 में, एस. स्वर्ण सिंह ने वाद संपत्ति एस. गुरनाम सिंह यानी याचिकाकर्ता के पिता को दे दी, जो उक्त वाद संपत्ति पर लगातार रहते रहे हैं।

iii. प्रत्यर्थीगण के दादा और याचिकाकर्ता के पिता के निधन के बाद, परिवार वाद संपत्ति के संबंध में एक समझौते पर पहुंचे, जिसके तहत, 15 नवंबर,

2014 को याचिकाकर्ता को विभाजित भूतल और पहली मंजिल का कब्जा दिया गया।

iv. इसके बाद, प्रत्यर्थीगण के पिता और माता ने याचिकाकर्ता को धमकी दी, इस प्रकार से याचिकाकर्ता के सभी सामानों को इस आधार पर वाद संपत्ति से हटा दिया गया कि चूंकि याचिकाकर्ता के पिता वाद संपत्ति के मालिक नहीं थे, इसलिए उन्हें प्रत्यर्थीगण के पक्ष में कोई वसीयत निष्पादित करने का कोई अधिकार नहीं है।

v. इसके बाद, याचिकाकर्ता ने प्रत्यर्थीगण के खिलाफ घोषणा और स्थायी व्यादेश के लिए वाद दायर किया और इसे 24 दिसंबर, 2021 के आदेश के द्वारा इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि याचिकाकर्ता यह दिखाने के लिए कोई सबूत पेश करने में विफल रहा कि उसके पिता द्वारा निष्पादित वसीयत, कानून के अनुसार प्रमाणित थी।

vi. इसके बाद, याचिकाकर्ता ने उपरोक्त आदेश के विरुद्ध जिला न्यायालय के समक्ष नि.सि.अ. 15/22 शीर्षक "एस. अमरजीत सिंह बनाम जसविंदर सिंह" अपील दायर और यह न्यायनिर्णयन के लिए लंबित है।

vii. इसके अलावा, प्रत्यर्थीगण ने सि.वा. सं. 547/2022 अनिवार्य और स्थायी व्यादेश के लिए वाद दायर किया, जिसके बाद याचिकाकर्ता ने सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत एक आवेदन दायर किया, और

प्रत्यर्थीगण ने सि.प्र.सं. के आदेश XIII नियम 1 और 2 के तहत आवेदन दायर किया।

viii. इसके बाद, याचिकाकर्ता ने सि.प्र.सं. के आदेश XIII नियम 1 और 2 के तहत आवेदन का जवाब दायर किया, जिसकी विचारण न्यायालय ने अनुमति दी थी।

ix. 22 सितंबर, 2023 को याचिकाकर्ता ने सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन में संशोधन के लिए एक आवेदन दायर किया, जिससे कुछ नए आधार सामने आए जो प्रत्यर्थीगण द्वारा दायर किए गए नए दस्तावेजों के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए।

x. इसके बाद, विद्वान विचारण न्यायालय ने पक्षकारगण को खंडन करने का अवसर प्रदान किया और याचिकाकर्ता ने दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 340 के तहत आवेदन दायर किया।

xi. दिनांक 23 सितंबर, 2023 के आदेश के द्वारा विद्वान विचारण न्यायालय ने सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत याचिकाकर्ता द्वारा दायर उपरोक्त आवेदन को खारिज कर दिया गया। इससे व्यथित होकर याचिकाकर्ता ने वर्तमान याचिका दायर की है।

3. याचिकाकर्ता की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता ने प्रस्तुत किया कि विद्वान निचली अदालत द्वारा पारित आक्षेपित आदेश नैसर्गिक न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन है और विधि की दृष्टि से दोषपूर्ण है।

4. यह प्रस्तुत किया गया कि आक्षेपित आदेश अनुमानों और सारांशों पर आधारित है और अभिलेख पर के तथ्यों और सामग्री को ध्यान में नहीं रखा है।

5. यह प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय ने मामले की पूरी विधिक और तथ्यात्मक स्थिति की गलत व्याख्या और गलत अर्थ लगाया है जिसके परिणामस्वरूप न्याय की हत्या हुई है।

6. यह भी प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय यह समझने में विफल रहा है कि प्रत्यर्थीगण द्वारा प्रस्तुत 20 अप्रैल, 1979 का साधारण मुख्तारनामा (इसके बाद "जी.पी.ए".), जो दर्शाता है कि प्रत्यर्थीगण के दादा ने याचिकाकर्ता के पिता के पक्ष में उक्त जी.पी.ए. पर जाली हस्ताक्षर किए थे, और केवल विशिष्ट कर्तव्यों और विशिष्ट चरित्रों का पालन करने के उद्देश्य से किया गया था।

7. यह प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय इस बात पर विचार करने में विफल रहा कि प्रत्यर्थीगण 30 जून, 2006 की वसीयत के आधार पर वाद संपत्ति पर स्वामित्व का दावा कर रहे हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे वाद संपत्ति के मालिक नहीं हैं, प्रत्यर्थीगण के दादा द्वारा हस्ताक्षरित और पंजीकृत किया गया था, और इसलिए उक्त वसीयत कानून की नजर में लागू नहीं होती है।

8. यह प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय इस बात पर विचार करने में विफल रहा कि मुख्तारनामा के बीच में विक्रय करने का करार करके, प्रत्यर्थीगण जानबूझकर न्यायालय को धोखा देने की कोशिश कर रहे थे।

9. यह आगे प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय ने इस बात को ध्यान में नहीं रखा कि प्रतिवादी ने वाद संपत्ति पर अपना पूर्ण स्वामित्व स्थापित किए बिना अनिवार्य और स्थायी व्यादेश के लिए वाद दायर किया है।

10. यह प्रस्तुत किया गया कि विद्वान विचारण न्यायालय ने इस तथ्य को ध्यान में नहीं रखा कि अपील सं. आर.सी.ए. डी.जे. 15/22 शीर्षक ***"एस अमरजीत सिंह बनाम जसविंदर सिंह"*** 24 दिसंबर, 2021 के आदेश के खिलाफ है जो अभी भी न्यायनिर्णयन के लिए लंबित है।

11. उपरोक्त प्रस्तुतियों को ध्यान में रखते हुए, यह प्रार्थना की जाती है कि वर्तमान पुनरीक्षण याचिका की अनुमति दी जाए, और 23 सितंबर, 2023 के आक्षेपित आदेश को अपास्त किया जाए।

12. याचिकाकर्ता की ओर से उपस्थित अधिवक्ता को सुना और अभिलेख पर की सामग्री का भी अवलोकन किया।

13. अभिलेख पर मौजूद सामग्री के अनुसार, विद्वान विचारण न्यायालय ने 23 सितंबर, 2023 के आक्षेपित आदेश के द्वारा यह अभिनिर्धारित किया कि सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत दायर आवेदन पर न्यायनिर्णयन

करने के लिए, न्यायालय को याचिकाकर्ता के मामले का आकलन करने के लिए वादपत्र में किए गए प्रकथनों और उसमें संलग्न दस्तावेजों का अवलोकन करने की आवश्यकता है। विद्वान विचारण न्यायालय ने आक्षेपित आदेश पारित करते हुए आगे कहा कि याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए आधार विचारणीय हैं और न्यायालय को गुणागुण के आधार पर इसका न्यायनिर्णयन करना होगा और इसे सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत किए गए आवेदन में इसका निर्णय नहीं किया जा सकता है। 23 सितंबर, 2023 के आक्षेपित आदेश के प्रासंगिक पैराग्राफ नीचे दिए गए हैं:

"आदेश

1. वादपत्र की अस्वीकृति के लिए प्रतिवादी की ओर से सि.प्र.सं. की धारा 151 सहपठित आदेश 7 नियम 11 के तहत किया गया आवेदन।

2. प्रतिवादी ने निम्नलिखित तर्क दिए हैं:-

2.1. यह तर्क दिया गया है कि श्री एस. हरचरण सिंह, एस. स्वर्ण सिंह और एस. गुरनाम सिंह (वादी के दादा और प्रतिवादी के पिता) सगे भाई हैं। इसके अलावा, एस. गुरनाम सिंह के दो बेटे एस. जसविंदर सिंह (वादी के पिता) और एस. अमरजीत सिंह (यहाँ प्रतिवादी) हैं।

2.2. यह तर्क दिया गया है कि 06.10.1959 को, एस. हरचरण सिंह और एस. स्वर्ण सिंह ने श्री शांति नारायण, श्री प्रकाश नारायण, श्री जय नारायण और श्री शिव नारायण से विषयगत संपत्ति खरीदी। वादी द्वारा दायर बिक्रय विलेख का अध्ययन करने के बाद, यह स्पष्ट हुआ कि केवल एस. हरचरण सिंह और एस. स्वर्ण सिंह ही विषयगत संपत्ति के मालिक हैं, न कि एस. गुरनाम सिंह।

2.3. यह तर्क दिया गया है कि उक्त विषयगत संपत्ति को 1979 में एस. स्वर्ण सिंह द्वारा एस. गुरनाम सिंह को रहने के लिए दी गई थी, जब एस. गुरनाम सिंह

अपने भाई एस. स्वर्ण सिंह के लिए काम कर रहे थे। प्यार और स्नेह के कारण, बिना किसी उपयोक्ता प्रभार के एस. गुरनाम सिंह को केवल कब्जा दिया गया था।

2.4. यह तर्क दिया गया है कि वर्तमान वाद में, वादी के पक्ष में एस. गुरनाम सिंह द्वारा हस्ताक्षरित और पंजीकृत दिनांक 30.06.2006 की वसीयतनामा के आधार पर वादी स्वामित्व का दावा दावा कर रहे हैं। इस तथ्य के बावजूद कि एस. गुरनाम सिंह विषयगत संपत्ति के मालिक नहीं थे, उन्होंने वादी के पक्ष में वसीयतनामा पर हस्ताक्षर किए और निष्पादित किया। इसलिए, दिनांक 30.06.2006 का वसीयतनामा शुरुआत से ही अवैध है और इसकी कोई अहमियत नहीं है और केवल इसी आधार पर इसे खारिज किया जा सकता है।

2.5. यह तर्क दिया गया है कि वादी ने दिनांक 20.04.1979 को एक कथित साधारण मुख्तारनामा (जी.पी.ए.) प्रस्तुत किया है जिसमें एस. स्वर्ण सिंह ने पृष्ठ 6 और 7 पर एस. गुरनाम सिंह के पक्ष में जी.पी.ए. पर हस्ताक्षर किए और निष्पादित किया। दिनांक 20.04.1979 के साधारण मुख्तारनामा के पृष्ठ 6 पर स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि जी.पी.ए. केवल विशिष्ट कर्तव्यों और औपचारिकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से प्रदान किया गया था। यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि वादी ने इस अदालत में नकली दस्तावेज जमा किए हैं, जिसमें स्वर्ण सिंह के हस्ताक्षर जाली और झूठे हैं।

2.6. यह तर्क दिया गया है कि वादी ने इस अदालत को धोखा देने के आशय से जानबूझकर पृष्ठ 8 और 9 डाला, जिसमें मुख्तारनामा के बीच में एक विक्रय विलेख है। यह हेरफेर पुर्णतः स्पष्ट है क्योंकि नोटरी स्टैम्प स्पष्ट रूप से केवल इन दो पृष्ठों पर ही नहीं है। यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि वादी ने इस अदालत में जाली दस्तावेज प्रस्तुत किए हैं, जिसमें स्वर्ण सिंह के हस्ताक्षर जाली और झूठे हैं।

2.7. यह तर्क दिया गया है कि साधारण मुख्तारनामा, विक्रय विलेख और अन्य दस्तावेज जिसमें एस. स्वर्ण सिंह के जाली और नकली हस्ताक्षर हैं,

केवल प्रश्नगत संपत्ति पर स्वामित्व स्थापित करने के लिए हैं। इसके अलावा, प्रतिवादी एस. स्वर्ण सिंह के हस्ताक्षर की प्रामाणिकता को सत्यापित करने के लिए उत्तर के साथ स्वर्ण सिंह के पुन: आवंटन पत्र और पैन कार्ड की प्रति दाखिल किया गया है।

2.8 यह तर्क दिया गया है कि वादी ने विषयगत संपत्ति पर अपना पूर्ण स्वामित्व स्थापित किए बिना प्रतिवादी के खिलाफ अनिवार्य और स्थायी व्यादेश के लिए वर्तमान वाद दायर किया है। इसलिए, वर्तमान वाद को न्यायालय शुल्क के प्रयोजन के लिए उचित रूप से मूल्यांकन नहीं किया गया है क्योंकि वादी अनिवार्य और स्थायी व्यादेश के नाम पर वादी ने वास्तव में वाद संपत्ति पर कब्जे की मांग की है। इसके अलावा, वादी ने राहत शब्द को 'अनिवार्य व्यादेश' के रूप में इस्तेमाल किया है और आगे मांग की है कि प्रतिवादी को वाद संपत्ति का कब्जा सौंपने का निर्देश दिया जाए, जो कि कब्जे से अवमुक्ति है और न्यायालय शुल्क अधिनियम, 1870 की धारा 7 (v) के अनुसार है। इसलिए, वाद का मूल्यांकन वाद संपत्ति के बाजार मूल्य पर न्यायालय शुल्क के प्रयोजन के लिए किया जाना चाहिए।

2.9. प्रतिवादी द्वारा यह तर्क दिया गया है कि वादी ने स्वामित्व की घोषणा नहीं दिखाई है जिसका स्वत्वाधिकार विवादित है। आगे यह तर्क दिया गया है कि वादी द्वारा दायर दस्तावेजों में अलग-अलग हस्ताक्षर हैं। आगे यह तर्क दिया गया है कि वादी ने उचित अदालत शुल्क दायर नहीं किया है और वादी के पास वर्तमान वाद दायर करने के लिए कोई वाद हेतुक नहीं है।

3. इसके विपरीत, वादी द्वारा यह तर्क दिया गया है कि वादी का पहले से ही वाद संपत्ति पर कब्ज़ा है, अतः, न्यायालय फीस का उचित भुगतान किया गया है।

3.1. यह तर्क दिया गया है कि आवेदन पर विचार करते समय केवल वादपत्र देखी जानी चाहिए और लिखित बयान के साथ-साथ प्रतिवादियों द्वारा दायर दस्तावेजों का कोई संबंध नहीं है।

3.2. यह तर्क दिया गया है कि वर्तमान आवेदन पोषणीय नहीं है क्योंकि यह प्रतिवादी द्वारा इस अदालत की कार्यवाही में देरी करने और आगे वादी

को परेशान करने के एकमात्र उद्देश्य से दायर किया गया है जो पहले से ही शारीरिक, आर्थिक और मानसिक रूप से पीड़ित हैं और वर्तमान आवेदन विधिक प्रक्रिया का कुप्रयोग और दुरुपयोग है, इसलिए प्रतिवादी का आवेदन भारी जुर्माने के साथ खारिज करने योग्य है।

3.3. यह तर्क दिया गया है कि वर्तमान आवेदन या तो न्याय नीति के तहत या इस देश के कानून के तहत पोषणीय नहीं है, इस तथ्य के मद्देनजर कि वादी के पास उसके पक्ष में और प्रतिवादी के खिलाफ बहुत अच्छा वाद हेतुक है, जिसके वादपत्र में विस्तार से उल्लेख किया गया है और प्रतिवादी ने मामले की कार्यवाही में देरी करने के दुर्भावनापूर्ण आशय से झूठा और हल्का आवेदन दायर किया है।

3.4. यह तर्क दिया गया है कि वादी का वाद बहुत अच्छी तरह से पोषणीय है क्योंकि वादी पहले से ही अभिलेख पर रखे गए पंजीकृत वसीयतनामा के आधार पर वाद संपत्ति के असली मालिक हैं।

3.5. यह तर्क दिया गया है कि आवेदन पर प्रतिवादी द्वारा हस्ताक्षर नहीं किए गए हैं और यह कानून का उल्लंघन है। आगे यह तर्क दिया गया है कि वादी वाद संपत्ति के मालिक हैं।

4. आगे बढ़ने से पहले, विधिक स्थिति का उल्लेख करना उचित होगा। सि.प्र.सं. के आदेश 7 नियम 11 निम्नानुसार है:-

"सि.प्र.सं. का आदेश 7 नियम 11 - वादपत्र की अस्वीकृति-वादपत्र को निम्नलिखित मामलों में अस्वीकार कर दिया जाएगा:

(क) जहाँ यह वाद हेतुक का खुलासा नहीं करता है:

(ख) जहां दावाकृत अनुतोष न्यून-मूल्यांकित है और वादी, अदालत द्वारा आवश्यक होने पर, अदालत द्वारा तय किए गए समय के भीतर मूल्यांकन को सही करने में विफल रहता है;

(ग) जहां दावाकृत अनुतोष का उचित मूल्यांकन किया गया है, लेकिन वादपत्र अपर्याप्त रूप से स्टाम्पित कागज पर लिखी गई है, और वादी, अदालत द्वारा आवश्यक होने पर अदालत द्वारा निर्धारित किए गए समय के भीतर आवश्यक स्टांप-पेपर की आपूर्ति करने में विफल रहता है;

(घ) जहाँ वादपत्र के कथन से वाद किसी विधि द्वारा वर्जित प्रतीत होता है,

(ङ) जहाँ यह दूसरी प्रति; में दाखिल नहीं किया गया है:

(च) जहाँ अभियोक्ता नियम 9 के प्रावधानों का पालन करने में विफल रहा है।

बशर्ते कि मूल्यांकन में सुधार या अपेक्षित स्टाम्प-पत्रों की आपूर्ति के लिए न्यायालय द्वारा निर्धारित समय को तब तक नहीं बढ़ाया जाएगा जब तक कि न्यायालय, दर्ज किए जाने वाले कारणों से, संतुष्ट न हो जाए कि वादी को असाधारण प्रकृति के किसी भी कारण से रोका गया था मूल्यांकन को सही करने या अपेक्षित स्टाम्प-पेपर की आपूर्ति करने से, जैसा भी मामला हो, न्यायालय द्वारा निर्धारित समय के भीतर और इस तरह के समय को बढ़ाने से इनकार करने से वादी के साथ घोर अन्याय होगा।

5. यह सुस्थापित विधि है कि सि.प्र.सं. के आदेश 7 नियम 11 प्रयोज्यता के न्यायनिर्णयन के समय, केवल वादपत्र की सामग्री देखी जानी चाहिए।

"सुश्री गुंजन खन्ना और अन्य बनाम श्री अरुणाभ मैत्रा वाद सं. 149/15 पृष्ठ सं. 2/11 2010 IV ए.डी. (दिल्ली) 238, में यह अभिनिर्धारित किया गया था कि, सि.प्र.सं. के आदेश 7 नियम 11 के तहत "किसी आवेदन पर फैसला करने के उद्देश्य से, अदालत को केवल वादपत्र की जांच करने की आवश्यकता है और न तो लिखित बयान, और न ही कोई अन्य अभिवचन उक्त चरण में विचार का विषय होना चाहिए" इसके अलावा, सलीम भाई और अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य और अन्य, (2003) 1 एस.सी.सी. 557 में, यह अभिनिर्धारित किया गया था कि " सि.प्र.सं. के आदेश 7 नियम 11 के खंड (क) और (घ) के तहत आवेदन पर निर्णय लेने के प्रयोजनों के लिए, वादपत्र में दिए गए प्रकथन वास्तविक हैं; लिखित बयान में प्रतिवादी द्वारा दी गई अभिवचन इस स्तर पर पूरी तरह से अप्रासंगिक होगी "

6. जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यह कानून का दृष्टिकोण है, इस स्तर पर वाद की पोषणीयता का निर्णय करने के लिए, केवल वादपत्र की सामग्री और वादी द्वारा भरोसा किए गए दस्तावेज ही वास्तविक हैं।

7. इस अदालत की सुविचारित राय है कि प्रतिवादियों द्वारा उठाए गए तर्क विचारणीय मुद्दे हैं जिसे साक्ष्य के अभाव में इस स्तर पर तय नहीं किया जा सकता है। उपरोक्त विवेचन के मद्देनजर, वादपत्र में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह दर्शा सके कि इसे अस्वीकार किया जा सकता है। वादीगण ने खुद को वाद संपत्ति का मालिक होने का दावा किया है। वाद संपत्ति पुलिस थाना - एम.एस. पार्क के अंतर्गत आती है और इस अदालत के पास वाद संपत्ति पर अधिकार क्षेत्र है। तदनुसार, प्रतिवादी द्वारा सि.प्र.सं. के आदेश 7 नियम 11 के तहत दायर आवेदन खारिज किया जाता है।

8. 21.12.2023 को मुद्दों को तैयार करने के लिए रखा गया। दस्तावेजों से इनकार करने वाले हलफनामे/प्रवेश के साथ प्रस्तावित मुद्दों को दायर किया जाए।

8. 21.12.2023 को विरचित मुद्दों को प्रस्तुत करें। प्रस्तावित मुद्दों को शपथपत्र/प्रवेश अस्वीकृति दस्तावेजों के साथ दाखिल किया जाए।"

14. यह विधि का सुस्थापित सिद्धांत है कि सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत प्रावधान, किसी वादपत्र की अस्वीकृति का प्रावधान करता है, और उक्त नियम के तहत उस आवेदन में न्यायिक जांच का दायरा वादपत्र में किए गए प्रकथनों की जांच करने तक सीमित है। न्यायालय के पास वाद हेतुक के आभाव के कारण वादपत्र को खारिज करने का अधिकार है, यदि मांगी गई अनुतोष का कम मूल्यांकन किया जाता है या न्यायालय द्वारा निर्धारित समय अवधि के भीतर मूल्यांकन को सही नहीं किया जाता है; या यदि अपर्याप्त न्यायालय शुल्क का भुगतान किया जाता है या अतिरिक्त न्यायालय शुल्क न्यायालय द्वारा निर्धारित समय अवधि के भीतर प्रदान नहीं किया जाता है; या यदि वादपत्र में यह आरोप लगाया गया है कि वाद किसी क़ानून के प्रावधानों

द्वारा वर्जित है। इन परिस्थितियों में न्यायालय किसी वादपत्र को अस्वीकार करने पर विचार कर सकता है।

15. वर्तमान याचिका में, याचिकाकर्ता आक्षेपित आदेश में संशोधन की मांग कर रहा है, जिसके तहत सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत याचिकाकर्ता के आवेदन को विद्वान विचारण न्यायालय ने खारिज कर दिया था। आक्षेपित आदेश में कहा गया है कि प्रत्यर्थी द्वारा दायर वादपत्र को उन आधारों पर खारिज नहीं किया जा सकता है जो विचारणीय मुद्दे विरचित हैं और इसलिए, सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन पर निर्णय लेने के चरण में, विद्वान विचारण न्यायालय द्वारा इसमें हस्तक्षेप नहीं किया जा सकता है। इस तरह के उदाहरणों का विश्लेषण माननीय उच्चतम न्यायालय द्वारा कई निर्णयों में किया गया है।

16. ***कमला बनाम के.टी. ईश्वर सा***, (2008) 12 **एस.सी.सी.** 661 के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 को लागू करने के लिए साक्ष्य के विश्लेषण के पहलू का निपटान किया और निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया:

> *"**21.** संहिता के आदेश 7 नियम 11(घ) का सीमित अनुप्रयोग है। यह दिखाया जाना चाहिए कि वाद किसी भी कानून के तहत वर्जित है। इस तरह का निष्कर्ष वादपत्र में किए गए प्रकथनों से निकाला जाना चाहिए। हमारी राय में, आदेश 7 नियम 11 के विभिन्न खंडों को मिश्रित नहीं किया जाना चाहिए। जबकि किसी मामले में, वादपत्र की अस्वीकृति के लिए आवेदन उसके विभिन्न उपखंडों में*

निर्दिष्ट एक से अधिक आधारों पर दायर किया जा सकता है, उस उद्देश्य के लिए एक स्पष्ट निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए। संहिता के आदेश 7 नियम 11 के खंड (घ) को लागू करने के लिए जो प्रासंगिक होगा, वे वादपत्र में किए गए प्रकथन हैं। उस उद्देश्य के लिए, कोई जोड़ या घटाव नहीं हो सकता है। न्यायालय की ओर से अधिकार क्षेत्र की अनुपस्थिति को विभिन्न चरणों में और संहिता के विभिन्न प्रावधानों के तहत लागू किया जा सकता है। संहिता का आदेश 7 नियम 11 एक है, आदेश 14 नियम 2 दूसरा है।

***22.** संहिता के आदेश 7 नियम 11 (डी) को लागू करने के उद्देश्य से, किसी भी साक्ष्य पर गौर नहीं किया जा सकता है। पक्षकारगण के बीच मामले के गुणागुण के आधार पर उत्पन्न होने वाले मुद्दे इस स्तर पर न्यायालय के दायरे में नहीं होंगे। सभी मुद्दे उक्त प्रावधान के तहत किसी आदेश का विषय-वस्तु नहीं होंगे।*

17. उपर्युक्त निर्णय में, माननीय उच्चतम न्यायालय ने अभिप्रेक्षित किया कि सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन किए जाने की स्थिति में, न्यायालय के पास पक्षकारगण द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के संबंध में सीमित शक्ति होगी। ऐसे आवेदन में कोई भी मुद्दा जो गुणागुण के आधार पर उत्पन्न हो सकता है, न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर है।

18. उपरोक्त मुद्दे को पहले भी इस न्यायालय द्वारा कई मामलों में निपटान किया जा चुका है, जैसे कि ***अवतार सिंह नरूला बनाम धरमबीर साहनी*** **2008 एस.सी.सी. ऑनलाइन दिल. 680,** के मामले में इस न्यायालय की एक खण्ड पीठ ने निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया:

*"**14....** उपर्युक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, हमारा विचार है कि वाद दायर करने का एक वैध कारण है और इसमें ऐसे विचारण योग्य मुद्दे शामिल हैं*

जिसमें पक्षकार के साक्ष्य की आवश्यकता होती है। इसलिए अपीलार्थियों के तर्क को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार, सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत अपीलार्थियों का आवेदन पोषणीय नहीं है और विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा पारित आदेश कायम है।

19. इस न्यायालय ने ***अवतार सिंह नरूला (पूर्वोक्त)*** के मामले में सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 को नियंत्रित करने वाले सुस्थापित विधिक सिद्धांत की व्याख्या की। पीठ ने अबिनिर्धरित किया कि न्यायालय के समक्ष लाए गए मुद्दों का निर्णय सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत दायर आवेदन में नहीं किया जा सकता है, जिसमें पक्षकारगण के साक्ष्य का विश्लेषण करने की आवश्यकता होती है या यह ऐसे मुद्दे सृजित करते है जो विचारणीय प्रकृति के होते हैं। यह भी स्थापित किया गया है कि जहां वाद दायर करने का कोई वैध कारण है और इसमें वे मुद्दे शामिल हैं जिसके लिए पक्षकारगण के साक्ष्य की आवश्यकता होती है, वहां उच्च न्यायालय को अधीनस्थ न्यायालयों के निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने का कोई आधार नहीं है।

20. चूँकि यह देखा गया है कि आक्षेपित आदेश में कोई दुर्बलता नहीं है जिसे इस न्यायालय के समक्ष चुनौती दी गई है, इसलिए इस स्तर पर; सि.प्र.सं. की धारा 115 के तहत इस न्यायालय के पुनरीक्षण क्षेत्राधिकार के दायरे की जांच करना उचित हो जाता है। ***अंबादास खंडूजी शिंदे बनाम अशोक सदाशिव मामुरकर,*** **(2017) 14 एस.सी.सी. 132** में माननीय उच्चतम न्यायालय ने प्रतिपादित किया कि उच्च न्यायालय अपने पुनरीक्षण क्षेत्राधिकार के प्रयोग में

विचारण न्यायालय के तथ्यात्मक निष्कर्षों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता है। ऐसा क्षेत्राधिकार ऐसे मामलों तक ही सीमित रहता है, जिसमें अधीनस्थ न्यायालयों द्वारा क्षेत्राधिकार का अनियमित प्रयोग किया गया है।

21. इसी तरह ***आई.टी.आई. लिमिटेड बनाम सीमेंस सार्वजनिक संचार नेटवर्क लिमिटेड,*** **(2002) 5 एस.सी.सी. 510,** के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय ने सि.प्र.सं. की धारा 115 के दायरे के संबंध में अभिनिर्धारित किया है कि उच्च न्यायालय द्वारा प्रयोग की जाने वाली पर्यवेक्षी या पुनरीक्षण संबंधी अधिकार क्षेत्र किसी अधीनस्थ न्यायालय द्वारा की गई अधिकार क्षेत्र संबंधी त्रुटि, यदि कोई हो, को सुधारने के उद्देश्य तक ही सीमित है।

22. वर्तमान मामले में, विद्वान विचारण न्यायालय ने याचिकाकर्ता द्वारा लिए गए आधारों पर वादपत्र को खारिज नहीं करना उचित समझा और अभिनिर्धारित किया कि याचिकाकर्ता द्वारा दी गई दलीलों के लिए न्यायालय को वाद की पेचीदगियों में जाने की आवश्यकता होगी और सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत किए गए आवेदन में इसकी अनुमति नहीं है।

23. वादपत्र में किए गए प्रकथनों के अनुसार, पैराग्राफ 5 में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि प्रतिवादी 30 जून, 2006 की पंजीकृत वसीयत के आधार पर पूर्ण स्वामित्व का दावा कर रहे हैं और याचिकाकर्ता द्वारा इसे विवादित किया जा रहा है, इसलिए विद्वान विचारण न्यायालय ने सि.प्र.सं. के

आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन को उचित रीति से खारिज कर दिया है, क्योंकि उपरोक्त मुद्दा वह है जिसका विचारण में निपटान किया जाना चाहिए और इसे केवल वादपत्र में किए गए प्रकथनों के आधार पर निर्धारित नहीं किया जा सकता है।

24. विद्वान विचारण न्यायालय ने सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत दायर याचिकाकर्ता के आवेदन पर सही न्यायनिर्णयन किया है, क्योंकि याचिकाकर्ता द्वारा लिए गए आधारों को उक्त प्रावधान के तहत आवेदन पर निर्णय लेने के चरण में निर्धारित नहीं किया जा सकता है और केवल तभी पता लगाया जा सकता है जब पक्षकारगण विचारण के दौरान साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। पक्षकारगण द्वारा सामने लाया गया कोई भी मुद्दा, जिसमें न्यायालय को साक्ष्य की जटिलताओं में जाने की आवश्यकता होती है, सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन में तय नहीं किया जा सकता है।

25. उपरोक्त निर्णयों में निर्धारित सिद्धांत और वर्तमान तथ्यों और परिदृश्यों पर इसके लागु होने को ध्यान में रखते हुए, इस न्यायालय का विचार है कि विद्वान विचारण न्यायालय के निर्णय को केवल इस आधार पर अवैध या तत्वतः विधि विरुद्ध नहीं कहा जा सकता है कि न्यायालय ने गलती से इसमें शामिल विधि के प्रश्न पर निर्णय ले लिया है। बल्कि, सि.प्र.सं. की धारा 115 एक विशिष्ट प्रकार के अवरोध की शुरुआत करती है जिसका सही मायने में पालन करने की आवश्यकता है। यह न्यायालय अपनी पुनरीक्षण शक्तियों का

प्रयोग करने के लिए सशक्त है जहां तत्वतः विधि विरुद्ध या क्षेत्राधिकार अवैधता स्थापित की जाती है और केवल किसी आवेदन के गलत न्यायनिर्णयन के आधार पर किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं होती है।

26. उपरोक्त विवेचनों के आलोक में, यह स्पष्ट है कि सि.प्र.सं. की धारा 115 के तहत संशोधन का कोई मामला नहीं बनाया गया है और याचिकाकर्ता यह दिखाने में विफल रहा है कि ऐसा पर्याप्त कारण मौजूद है जो सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत आवेदन पर निर्णय लेते समय विद्वान विचारण न्यायालय की ओर से अपनी अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करने में विफलता को स्थापित कर सकता है। इसलिए, विद्वान विचारण न्यायालय ने न तो अपने अधिकार क्षेत्र के प्रयोग में अवैध रूप से कार्य किया है और न ही तत्वतः विधि विरुद्ध कुछ किया है।

27. इस न्यायालय का विचार है कि श्री हिमांशु रमन सिंह, अतिरिक्त/वरिष्ठ सिविल न्यायधीश कड़कड़डूमा न्यायालय, नई दिल्ली द्वारा वाद सं. 547/2022 में दिनांक 23 सितंबर, 2023 को पारित आक्षेपित आदेश में किसी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है, इस प्रकार सि.प्र.सं. के आदेश VII नियम 11 के तहत याचिकाकर्ता के आवेदन को खारिज किया जाता है।

28. तदनुसार, इस पुनरीक्षण याचिका को खारिज किया जाता है। लंबित आवेदन, यदि कोई हो, उसे भी खारिज किया जाता है।

29. आदेश को तुरंत वेबसाइट पर अपलोड किया जाए।

चंद्र धारी सिंह, न्या.

24 नवंबर, 2023

डी.आई./डी.एस./आर.वाई.पी.

(Translation has been done through AI Tool: SUVAS)

अस्वीकरण : *देशी भाषा में निर्णय का अनुवाद मुकद्दमेबाज़ के सीमित प्रयोग हेतु किया गया है ताकि वो अपनी भाषा में इसे समझ सकें एवं यह किसी अन्य प्रयोजन हेतु प्रयोग नहीं किया जाएगा| समस्त कार्यालयी एवं व्यावहारिक प्रयोजनों हेतु निर्णय का अंग्रेज़ी स्वरूप ही अभिप्रमाणित माना जाएगा और कार्यान्वयन तथा लागू किए जाने हेतु उसे ही वरीयता दी जाएगी।*